RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-05
May-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

अमृत राय के उपन्यास में स्त्री-पुरुष संबंधो का चित्रण

Dr.Sapna Gupta

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 24 May 2018

Keywords
परिलक्षित, साम्राज्यवाद, अधीनता, आधुनिकता

ABSTRACT

अमृतराय के उपन्यासों ने स्त्री और पुरुष को विदेशी साम्राज्यवाद के प्रभाव में कुचल दिया और आधुनिक युग की दहलीज पर खड़ा कर दिया। अमृतराय का भारत राजनीतिक अधीनता और औपनिवेशिक आधुनिकता से जूझ रहा था। ब्रिटिश शासन ने बुर्जुआ पूंजीवाद और बुर्जुआ संस्कृति के युग की शुरुआत की। इससे घर और दुनिया के बीच समीकरण बदल गए।Was इन र-आउटर' डाइकोटॉमी, एक नए बाइनरी में तब्दील हो गया था- घर और दुनिया- बाहरी और भौतिक का प्रतिनिधित्व करने वाला दुनिया, जब कि घर एक की वास्तविक आध्यात्मिक पहचान और आंतरिक का प्रतीक था। महिला ने एक राष्ट्र के मूल्यों को अपनाया और अपनी विरासत और संस्कृति के भंडार के रूप में काम किया, जब कि एक ही समय में, एक धुरी थी जिसके चारों ओर पूरा परिवार घूमता था।

प्रस्तावना:

अमृतराय के उपन्यासों ने स्त्री और पुरुष को विदेशी साम्राज्यवाद के प्रभाव में कुचल दिया और आधुनिक युग की दहलीज पर खड़ा कर दिया। अमृत राय का भारत राजनीतिक अधीनता और औपनिवेशिक आधुनिकता से जूझ रहा था। ब्रिटिश शासन ने बुर्जुआ पूंजीवाद और बुर्जुआ संस्कृति के युग की शुरुआत की। इससे घर और दुनिया के बीच समीकरण बदल गए। इनर रूटर 'डाइकोटॉमी', को एक नए द्विआधारी में बदल दिया गया था- घर और दुनिया- बाहरी और भौतिक का प्रतिनिधित्व करने वाला दुनिया, जब कि घर एक की वास्तविक आध्यात्मिक पहचान और आंतरिक का प्रतीक था। महिला ने एक राष्ट्र के मूल्यों को अपनाया और अपनी विरासत और संस्कृति के भंडार के रूप में काम किया, जब कि एक ही समय में, एक धुरी थी जिसके चारों ओर पूरा परिवार घूमता था। इसलिए, भारतीय महिला को शिक्षित करने और उसे बहाल करने के लिए कैद बाधाओं को दूर करना आवश्यक हो गया ताकि वह देश की आध्यात्मिक और राष्ट्रीय विरासत को संरक्षित कर सके। माल विकाकार लेकर के रूप में, सांस्कृतिक इतिहासकार ने नई और सशक्त भारतीय महिला के बारे में लिखा।

महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा का मुद्दा भयभीत है क्योंकि यह उन्हें अत्यधिक पश्चिमीकृत, परंपराओं के लिए उपेक्षा और विघटनकारी व्यक्तिवाद' को प्रोत्साहित करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला पुरुष विज्ञान के विकल्प के लिए प्रेरित होता है, जब कि एक महिला से मानवि की के लिए समझौता किया जाता है। शैक्षिक ढांचे में दोहरे मानक हैं और यह एक लिंग पूर्वाग्रह से युक्त है। लेकिन बाद में, महिलाओं ने महसूस किया कि शिक्षा ने लैंगिक असमानता के प्रति महिला जागरूकता को बढ़ावा देने में मदद की है। शिक्षा ने उन्हें न केवल घरेलू कौशल से सुसज्जित किया है बल्कि प्रगतिशील विचारों को भी उत्पन्न किया है जिन्होंने उनके दिमाग को समृद्ध किया है। लेकिन ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा के परिणाम स्वरूप पश्चिमी, प्रच्छन्न और आत्म-भ्रमपूर्ण' स्मृतियों' का उदय हुआ। शिक्षित भारतीय महिला ने एक नई जीवन शैली विकसित की है, जो कभी-कभी समाज के कड़े नैतिक कोड की भी धज्जियां उड़ाती है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अमृतराय उपन्यासों में स्त्री और पुरुष के संबंधों पर बदलाव की एक नई हवा बह गई है। विवाहित जोड़े जिनके पास पर्याप्त उम्र या शैक्षिक मतभेद हैं, वे अपने रिश्तों मेंअ संगत और तनावपूर्ण महसूस करते हैं। भारतीय राष्ट्रवाद के विरोधी हेगामोनिक संघर्ष को विशेष रूप से 'महिलाओं को सुधारने' के मुद्दे पर लड़ा गया है। महिलाओं को सशक्त बनाने वाले कई कानून व्यवहार में आए हैं। 1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम और 1874 में संपत्ति का अधिकार अधिनियम ,ने विधवा को अपने पति की संपत्ति में हिस्सेदारी के लिए आजीवन ब्याज दिया, ये कुछ कानून हैं जो लागू किए गए हैं। उन्नीसवीं सदी के बंगाली पुनर्जागरण ने साहित्यिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन के युग की शुरुआत की है। कट्टरपंथी और प्रगतिशील मुक्त विचारकों के एक समूह के नेतृत्व में यंग बंगाल आंदोलन ने हिंदू समाज में प्रचलित दमनकारी धार्मिक और सामाजिक संरचनाओं के खिलाफ विद्रोह किया।

अमृतराय महिलानायक लगभग हमेशा बालहीन के रूप में चित्रित होते हैं। लेकिन बंगाली समाज में मातृत्व का महिमा मंडन किया जाता है। महिला को उन पुरुषों की नस्ल को पालने का काम सौंपा जाता है जिनके पास उचित गुण- साहस, राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना होनी चाहिए। माँ से एक अच्छी माँ की भूमिका के अनुरूप होने की उम्मीद की जाती है, जिसका अर्थ है कि उसे अपने बच्चे का नैतिक मार्गदर्शक और पहला शिक्षक बनना है। हालाँकि, पालन-पोषण की कठिन जिम्मेदारी केवल मध्यवर्गीय माँ को ही दी जाती है। एक कुलीन परिवार से संबंधित एक माँ को इस कार्य से छूट दी गई है। समाज के उपनिवेशित ढांचे में, असुरक्षित और नाराज पुरुष एक तरफ विध्वंसक महिला कामुकता को कम करने का प्रयास करता है। फिर भी वह खुद दूसरी महिलाओं के साथ विवाहेतर संबंधों के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकता। आम तौर पर मनुष्य को कड़क, चंचल दिमाग और हमेशा वैवाहिक और विवाहेतर संबंधों के बीच टीकाकरण के रूप में चित्रित किया जाता है।

अमृतराय समय में सामंती समाज द्वारा महिला का अत्यधिक शोषण किया जाता है। पारंपरिक, पुराने जमाने के सामंती रीति-रिवाजों ने स्त्री के दुखों को बढ़ाया है। लेकिन, अमृत राय समाज के पितृ सत्तात्मक विचारों से प्रभावित नहीं हैं। वह आम तौर पर अपनी नायिकाओं को शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्तियों के रूप में चित्रित करता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में उनकी आध्यात्मिकता, उनकी मजबूत व्यावहारिक भावना और जबरदस्त भाग्य को दर्शाया है।

आदमी और औरत के रिश्ते: आदमी के रिश्ते की गुणवत्ता उसके जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करती है। मानवीय रिश्तों में स्त्री और पुरुष का रिश्ता मानवता के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। स्त्री-पुरुष संबंध अमृत राय के प्रमुख उपन्यासों, विशेष रूप से' अमृतराय' का प्रमुख विषय था। वर्तमान पत्र इस उपन्यास के पुरुष और महिला पात्रों के बीच मानवीय संबंधों का अध्ययन और विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

अमृतराय उपन्यास में महिलाओं की पहचान: शब्द 'फेमिनिज्म' एक महिला के रूप में हमारी पहचान के बारे में गहन जागरूकता को संदर्भित करता है और स्त्री समस्याओं में बातचीत करता है। स्त्री का वशीकरण इतिहास का एक केंद्रीय तथ्य है और यह समाज में सभी

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

मनोवैज्ञानिक विकारों का मुख्य कारण है। नारीवाद केवल आंदोलन नहीं है, जो महिलाओं के लिए महिलाओं द्वारा चलाया जाता है बल्कि यह एक तरह का मानव मुक्ति आंदोलन है, जो समाज को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है कि महिलाएं भी इंसान हैं और उनकी समस्याओं, सपनों और जरूरतों के बारे में सोचती हैं। नारीवाद ने जीवन और साहित्य की सटीकता को बदल दिया है। नारीवादी विचार धारा ने भारत में अंग्रेजी साहित्य को प्रभावित करना शुरू कर दिया। महिलाओं के लेखन को आधुनिकतावाद और नारीवादी बयान के एक शक्तिशाली मीडिया के रूप में माना जाता था, इन महिला लेखकों ने बताया कि नारीवाद का अर्थ महिलाओं के सभी कष्टों को समाप्त करना है। भारत में महिला लेखक अपने मजबूत और निश्चित रूप से दुनिया की गति से मेल खाते हैं। हम देखते हैं कि वे अपने स्वयं के व्यक्तिगत सुगंधों को फैलाने में पूरी तरह से फूट रहे हैं। वे अपनी मौलिकता बहुमुखी प्रतिभा और मिट्टी के स्वदेशी स्वाद के लिए पहचाने जाते हैं जो वे अपने काम में लाते हैं।

उपसंहार:

अंत में, अमृतराय पति और पत्नी, पुरुष और महिला के प्रेमी और माता-पिता और बच्चे के बीच झूठे रिश्तों की गाथा है। मातृ-निर्धारण एक व्यापक पारिवारिक स्थिति में संरचित है। श्रीमती मोरेल अपने पति से असंतुष्ट हैं और अपने बच्चों के लिए प्यार और जीवन की ओर मुड़ती हैं। वह प्रेमियों के जुनून के साथ बच्चों का पालन-पोषण करती है और बदले में यह जुनून उसके बेटों के जीवन चक्र को प्रभावित करता है। अमृतराय दो प्रकार के प्रेम, भौतिक और आध्यात्मिक के बीच संघर्ष प्रस्तुत करता है। पॉलमोरेल का अपनी मां के अधिक प्रेम के कारण बहुत अधिक बोलबाला है और प्यार में कोई संतुष्टि हासिल करने में असमर्थ है। अमृत राय का माननाथा कि यदि आत्मा आत्मा से अलग शरीर नहीं है तो भौतिक प्रेम का पतन होना चाहिए। दोनों को संतुलन में लाया जाना चाहिए। एक-दूसरे के व्यक्तित्व और अन्यताओं का सम्मान करके आदमी और औरत को खुश किया जा सकता है। दोनों ओर से वर्चस्वमानवीय रिश्तों को खराब करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कार लेकर मालविका। अंतः पुर का सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ, हिंदूपत्नी, हिंदूराष्ट्र में उन्नीसवीं सदी के बंगाल में सरकार तानिका, घरेलूता और राष्ट्रवाद के स्वरों में।
2. आई बिड
3. अमृतराय अमृतराय, उपोनाससंगरो, कलकत्ता: विश्व-भारती ग्रन्थों बिभगा: अनुवाद दीपांकर रॉय, 1997, 202।
4. अमृतरायअमृतराय। चतुरंगा: एक उपन्यास, असोक मित्र (ट्रांस।), नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 51।
5. सरकार तनिका। राष्ट्रवादी प्रतीक चिह्न: उन्नीसवीं शताब्दी में महिलाओं की छवि बंगाली साहित्य, हिंदू पत्नी, हिंदूराष्ट्र, नई दिल्ली में: स्थायी काले, 2001, 203
6. अमृतराय अमृतराय। चतुरंगा: एक उपन्यास, असोक मित्र (ट्रांस।), नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 50।
7. इबिड, 55-56।
8. नंद्याशी, भारत में नारी बनाम नारीत्व: सांस्कृतिक और राजनीतिक मनोविज्ञान में एक निबंध एटदसाइकोलॉजी, नईदिल्ली: ओ यूपी, 1980, 41।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

9. उन्नीसवीं शताब्दी में कोलकाता में बूर्डॉर्ज़ बुर्जुआ वर्ग के अभूत पूर्व विकास के विस्तृत इतिहास के लिए, बिनोय घोष, बंग्ला रनब जागृति, कलकत्ता: ओरिएंट लॉन्ग मैन, (3आरपीटी) और बैंगलर समजीत इतिहास, कलकत्ता: प्रकाश भवन, (द्वितीय) देखें आर टी पी।), 1993- 2007।
10. अमृतरायअमृतराय। रिश्ते (जोगजोग), सुप्रिया चौधरी (ट्रांस।), नई दिल्ली: ओयूपी, 89।
11. अमृतरायअमृतराय। रिश्ते (जोगजोग), सुप्रिया चौधरी (ट्रांस।), नई दिल्ली: ओयूपी, 69, 223।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved